सं श्रो.वि |यमुना | 296 | 84 | 32371 — चूं कि हिरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० नगर पालिका यमुना नगर के श्रीमक श्री तुलसी राम तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य धममें इसके बाद लिखित मामले में कोई यौद्योगिक विवाद है ;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल निवाद की न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते है ;

इसलिए, अब, औदाँगिक विवाद अधिनियम 1949, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं 3(44)-84-3-श्रम, दिनांक 18 प्रप्रैल, 1984, द्वारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रुम न्यायालय, श्रम्बाला, की विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला म्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या जिलाद से सुसंगत श्रथवा सम्बन्धित मामला है :--

क्या श्री तुलसी राम की सेवामों का संमापन त्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ? सं. स्रो. वि./अम्बाला/53/84/32384—चृकि हिरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं (1) सिचव, हिरियाणा राज्य बिजली बोर्ड, चण्डीगढ़ (2) कार्यकारी अभियन्ता (श्रीपरेजन डिविजन), हिरियाणा राज्य विजली योर्ड, पिजोर (श्र्यकाला), के श्रीमक श्री गुरनाम नथा उसके प्रवन्धकी के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में थोर्ड श्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल जिवाद को न्यार्थानर्णय हेतु निर्दिण्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रम, भौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं 3(44)—84--3-श्रम, दिनांक 18 ग्रप्रैल, 1984,, हारा उक्ता भ्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रद्यीन गठित श्रम न्यायालय, ग्रम्बाला, को विवादप्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे कि सामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिश्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवंधकों तथा श्रमिव के बीच या तो दिवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है :--

. पया श्री गुरनाम की सेवार्श्नों का समापती न्यायीचित तथा ठीक है ? यथि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

्रां, मो, वि./प्रमुना/32434.—चूंकि हरियाणां के राज्यपाल की राय है कि में (1) सचिव हरियाणा राज्य बिजली बोर्ड, हरियाणा, चण्डीगढ़, (2) कार्यकारी अभियन्ता, ओप्रेशन डिवीजन, हरियाणा राज्य विजली बोर्ड, पिजीर (श्रम्वाला), के अभिक श्री राज कुमार तथा उसके प्रवन्धकों के गध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीडोगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद की त्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 194.7 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हिंद्याणा के राज्यपान इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना संव 3(44)84-3-अम, दिनांक 18 ग्रप्रैल, 1984, द्वारा उक्त अधिनियम को धारा 7 के अधीन गठित अमें न्यायालय, ग्रम्बाला, को विवादग्रस्त या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला स्थायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा अमिन के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत भाषवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री राज भुमार की, क्षेत्राओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहा का हकदार है ? विनाक उठ अगरत, 1984

हं को वि हिसार/27-84/32693. - चूंबि हरियाणा के राज्यवाल की राये है कि मैं अप-मण्डल अधिकारी, पी. डब्लयू. डी., पिइलक हैल्य, डब्लयू. जी. सी. सब-डिवीजन, सिरसा, के श्रमिक श्री राम दीन तथा उसके प्रबच्छकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित सामरे में कोई श्रीकोषिक विवाद है;

भीर चुकि हरियाणा के प्रात्यपात विवाद की व्याप निर्णय हेतु निविष्ट करता बोडनीय समझते हैं;

्ष्सिलए, ग्रव, गौसोंगिक विजान अभिनियम। 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणां के राज्यशंल इसके द्वारा सरकारी अधिग्रवना संब 9641-1-धम-70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970, के साथ पढ़ते हुए ग्रिक्षमूचना संब 3864-ए-एस और (ई)-अम/र्ग0/1348, दिनांक 8 मई, 1970, द्वारा उनत ग्रिधिनियम की धारा ए के मधीन गठित श्रम न्यायोलये, रीहराक, को विवादशस्त या उससे सुमंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निद्धित करते हैं, जो कि उनत प्रवत्थकों तथा श्रमिक के विवादशस्त या तथा है या उनत विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है :--

क्या भी राम वीन की सेवाभी का समापन न्यायोधित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?